International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-09-2020; Accepted: 19-09-2020; Published: 04-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 55-59

वैश्वीकृत विश्व में साम्राज्यवाद के विरुद्ध खड़ी नव वामपंथी कविता

षैजू के
शोध छात्र, कोच्चिन विश्वविद्यालय, कोच्चि, केरल, भारत

प्रस्तावना

साम्राज्यवाद के बारे में कुछ भी विचार करने से पहले यह प्रथम सवाल उठता है कि, साम्राज्यवाद क्या है? हिन्दुस्तान और दूसरे देशों ने बड़े बड़े साम्राज्य और सम्राट देखें हैं।इन सम्राटों ने दूसरे देश जीते, उन्हें लूटा खसोटा और अपने उपनिवेश बनाए। इसीलिए इन सम्राटों को भी साम्राज्यवादी कहा जाता है। साम्राज्यवाद शब्द का प्रयोग बिल्कुल नए अर्थ में था। सामंतों के साम्राज्यवाद से इसे अलग करने के लिए आजकल के साम्राज्यवाद को पूंजीवादी साम्राज्यवाद और पहले के साम्राज्यवाद को सामंती साम्राज्यवाद कहते हैं। लेनिन ने 1916 में ' साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था' नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी थी। लेनिन ने इस पुस्तक में बताया था कि साम्राज्यवाद पूंजीवाद की चरम अवस्था है। पूंजीवाद विकास करता करता जब अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है तो वह साम्राज्यवाद बन जाता है।उक्त पुस्तक में साम्राज्यवाद की परिभाषा देते हुए लेनिन ने लिखा है –" साम्राज्यवाद पूंजीवाद के विकास की वह अवस्था है जिसमें पहूंचकर इजारेदारियों तथा वित्तीय पूंजी का प्रभुत्व दृढ़ रूप से स्थापित हो चुका है, जिस अवस्था में पूंजी का निर्यात अत्यधिक महत्व ग्रहण कर चुका है,जिस अवस्था में अंतरराष्ट्रीय ट्रस्टों के बीच दुनिया का बंटवारा आरंभ हो गया है,जिस अवस्था में सबसे बड़ी पूंजीवादी ताकतों के बीच पृथ्वी के समस्त क्षेत्रों का बंटवारा पूरा हो चुका 1"साम्राज्यवाद की एक परिभाषा काउत्स्की की भी है। दूसरी इंटरनेशनल के युग के अर्थात 1889 से 1914 तक के 25 वर्षों के मुख्य मार्क्सवादी सिद्धांत नेता माने जाते थे। उन्होंने लिखा है- " साम्राज्यवाद अति विकसित औद्योगिक पूंजी की उपज है। वह हर औद्योगिक पूंजीवादी राष्ट्र की इस चेष्टा में निहित है कि वह बड़े-बड़े अंचलों पर ,इस बात की ओर कोई ध्यान दिए बिना उन अंचलों में कौन सी जातियां बस्ती है, उत्तरोत्तर अधिक अपना नियंत्रण स्थापित कर ले अथवा उन्हें छीनकर अपने में मिला लें।"2

नव वामपंथी कविता की साम्राज्यवाद विरोधी स्वर मानव भविष्य पर मंडराते अमानवीय समय के विरुद्ध विभिन्न संदर्भों में दर्ज विपक्ष के स्वर हैं। अंतर इतना मात्र है कि कहीं वह मुखरित है तो कहीं मौन। पर यह दोनों नव वामपंथी कविता की उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं, क्योंकि भविष्य को रूपायित करने में चुप्पी और चीख दोनों महत्वपूर्ण हैं। समकालीन कविता के अग्रसर कवि धूमिल की कविता ' मोचीराम ' की ये पंक्तियां इसके लिए उदाहरण के तौर पर ले सकते हैं।

"..... जबकि मैं जानता हूं कि इंकार
से भरी हुई एक चीख और एक समझदार चुप'
दोनों का मतलब एक है -
भविष्य गढ़ने में चुप और चीख़
अपनी अपनी जगह एक ही किस्म से
अपना अपना फर्ज अदा करते हैं "3

विश्व इतिहास साक्षी है कि दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद लगभग तमाम उपनिवेश साम्राज्यवादी शासन से स्वतंत्र हो गए । फिर भी साम्राज्यवाद है खत्म नहीं हुआ। दूसरे देशों को अपने अधीन बनाने के उपलक्ष्य में वह निरंतर नए-नए उपक्रम रचते गए ।इसके अनेक चित्र नव वामपंथी कविता में उपलब्ध हैं। नागार्जुन के 1981 की अपनी ' छोटी मछली बड़ी मछली ' शीर्षक कविता में अमेरिकी साम्राज्यवाद के चंगुल में फंसते भारत का चित्र मछलियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है -

" एक रोज़, अरब सागर में
कुमारी अंतरीप के निकट
अपने दौरे के दरमियान
बड़े मछली, छोटी मछली के करीब आई
.....छोटी मछली सचमुच चली गई अंदर
....बेचारी का बदन गायब हो चुका था
हज़म हो गया था, बड़ी मछली के
जठरानल कि आंच में..... सिर्फ
सींकिया ढांचा ही बच रहा था।"4

भारत का इतिहास गवाह है कि हजारों की तादाद में किसानों की आत्महत्या हो रही हैं। वास्तव में यह आत्महत्या नहीं ,बल्कि साम्राज्यवाद के अदृश्य आक्रमण में होने वाली हत्याएं है । नेपथ्य में

साम्राज्यवाद युद्धरत हैं। सिर्फ फर्क यह है कि वे भिन्न भिन्न रूपों में आते हैं ।अब उसको पहचानना आसान नहीं है ।नव वामपंथी कविता में नए रूपों में आते साम्राज्यवाद के चित्र उपलब्ध है।इस संदर्भ में उदय प्रकाश की ' बहेलियां ' शीर्षक कविता विचारणीय है।

" वे आए हैं इधर
हमारे मोहल्ले में कविता में कला में
तंबू गाड़ दिया है उन्होंने अपना
वे आए हैं
फूलों के तीर कमान
चिड़ियों की भाषा
बच्चों की हंसी
पौधों की हरियाली के साथ
विनम्र मुलायम धुले
साफ सफेद । " 5

कविता की अंतिम पंक्तियों में साम्राज्यवादियों के इस भव्य और आकर्षक बहिरंगी आकार के अंदर मौके की ताक में बैठे खूंखार दरिंदे को अनावृत किया गया है -

" .....वे बहेलिया हैं
एक न एक दिन
जब पहली बारिश की उमस के बाद
पौधा बढ़ना चाहेंगे ,चिड़िया चहचहाना
बच्चे हंसना ,नदी बहना
लड़की जब लंबे प्यार के बाद
ऊब कर जब ब्याह करना चाहेगी
वे अपने पैने दांत निकाल कर
गुर्राना शुरू कर देंगे
आखिरकार बहेलिए हैं वे।"6

यहां उदय प्रकाश यह व्यक्त करना चाहते हैं कि दुश्मन हमारी कविता में और काला में अर्थात हमारी संस्कृति में अपनी जड़े जमा रही है । औपनिवेशिक काल से ही साम्राज्यवाद संस्कृति को हथियार के रूप में उपयोग करता आया है । पुराने जमाने में उपनिवेशों की जनता को सभ्य बनाने के बहाने वह सांस्कृतिक हस्तक्षेप किया करता था तो आजकल देशों को अधीन बनाने के उपलक्षय में देशज संस्कृतियों पर योजनाबद्ध तरीके से हमला कर रहा है।

नव वामपंथी कविता जहां जहां साम्राज्यवादी अपसंस्कृति की पहचान कराती है वहां महज पहचान कराके वह चुप नहीं होती । वहां प्रतिरोध भी निहित है। पहचान का लक्ष्य ही प्रतिरोध खड़ा करना है। इस प्रकार के प्रतिसांस्कृतिक प्रतिरोध नव वामपंथी कविता के साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष का उल्लेखनीय पक्ष है। साम्राज्यवाद के पास अपनी कोई संस्कृति नहीं है ।क्योंकि युद्ध, हत्या, बलात्कार आदि बर्बरताओं को संस्कृति कहना गलत है ।वह निरंतर इस प्रकार की बर्बरता ही फैलाती है ।इसका असर बच्चों से लेकर बुद्धिजीवियों तक की मानसिकता में हम देख सकते हैं। भूमंडलीकरण साम्राज्यवाद का एक नया उपक्रम है ।बाजार और साम्राज्यवाद के संबंध का इतिहास बहुत पुराना है ।व्यापार के बहाने आए साम्राज्यवादीयों ने ही कालांतर में कमजोर देशों को अधीन करके उसे उपनिवेश बनाया था। भूमंडलीकरण के बहाने वे पुनः उसी उपक्रम का दोबारा प्रयोग कर रहे हैं ।इस गलत समय के वर्चस्व और उसकी अमानवीयता नव वामपंथी कवि पहचानते हैं। नेपथ्य में निरंतर प्रदीप का भी पहचानता है ने पति में निरंतर षड्यंत्ररत ऐसे साम्राज्यवादियों का पर्दाफाश करके राजेश जोशी ' नेपथ्य में हंसी ' नामक कविता में पर्दाफाश कराते हैं

" नदियों का नहीं
समुद्रों का नहीं
पहाड़ों का नहीं
बाजारों का समय है यह।"7

भूमंडलीकरण और बाजारवाद की अभिन्नता सूचित करने के लिए हिंदी में एक शब्द चल पड़ा है भूमंडलीकरण ।बाजार में बदलती पूरी दुनिया को और भी स्पष्ट करने के लिए यह शब्द ज्यादा उचित है। साम्राज्यवाद के भाषाई अभियान के प्रभाव से आज सही जगह सही शब्दों के प्रयोग को ही हम भूल जाते हैं क्योंकि शब्द से अर्थ भी छीन लिया जा रहा है। बाजार से संबंधित कात्यायनी की कविता है ' हमारे समय में कुछ काव्य विस्मृत शब्द और क्रियाएं ' ।

"रक्त बह रहा है सड़कों पर मौन
घर जल रहे हैं
बिक रहे हैं बच्चे और स्त्रियां
और सपने और श्रम
और हमारे सबसे कीमती पैदावरों और खनिजों की और संस्कृति के धरोहरों की
नीलामी बोली जा रही है दुनिया की मंडी में।"8

बाजारवाद से संबंधित बुनियादी सच है कि सारी चीज़ें वहां बेचने योग्य माल मात्र हैं। इस साम्राज्यवादी समय में माल में परिवर्तित चीजों की सूची चौकाने वाली है। कात्यायनी उसमें शामिल कीमती प्राकृतिक संसाधनों के साथ बच्चों , स्त्रियों एवं श्रम और सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं सपने को भी पहचानती है। साम्राज्य वादियों की साजिश इतनी अमानवीय है कि आदमी के सपने भी उनसे छीन लिए

जा रहे हैं ।अर्थात एक और साम्राज्यवाद उसके सांस्कृतिक अभियान के जरिए मनुष्य को अतीत से अथवा जड़ों से उखाड़ रहा है तो दूसरी और भविष्य से भी उसे विच्छिन्न कर रहा है। इससे यही निष्कर्ष निकल रहा है कि बाज़ार समय में मनुष्य भी प्राकृतिक संसाधनों के समान साम्राज्यवादियों के मनमाने शोषण का संसाधन मात्र है। याद रखना चाहिए कि ' वागर्थाविव संपृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये ' कहने वाले कालिदास से नव वामपंथी कविता तक के कवि शब्द और अर्थ संबंधी सवालों को सरलीकृत करने का विरोध करते आए हैं। क्योंकि वे महसूस करते हैं कि इससे मनुष्यता खतरे में पड़ सकती है। उदय प्रकाश की ' रात में हारमोनियम ' शीर्षक कविता भूमंडलीकृत दुनिया में खतरे में पड़ी चीजों का चित्र प्रस्तुत करती हैं -

" बचाना है तो बचाये जाना चाहिए
गांव में खेत, जंगल में पेड़, शहर में हवा
पेडों में घोसलें, अखबारों में सच्चाई ,राजनीति में नैतिकता ,
प्रशासन में मनुष्यता ,दाल में हल्दी।"9

पूंजीवादी साम्राज्यवाद के लिए अविकास माने अपना विकास है, न कि सामाजिक विकास।इसलिए इसमें आश्चर्य नहीं है कि उनके द्वारा प्रायोजित विकास से समाज में विषमताएं लगातार बढ़ रही है ।भूखमरों और भीखमंगों की बढ़ती सूची में अब विकासशील और अविकसित देश की दिशा में हो रहे हैं। साम्राज्यवादी समय की और एक विशेषता है बढ़ती लालच। वास्तव में साम्राज्यवाद का मनोविज्ञान ही लालच है। दूसरों के हिस्सों की चीजों को हड़पने की मानसिकता इससे उपजती है । कुमार अंबुज की ' अतिक्रमण ' शीर्षक कविता इस खतरे को विस्तार से व्यक्त करती है -

" अतिक्रमण के समाज में जीवित रहने के लिए
सबसे पहले दूसरे के हिस्सों की जगह चाहिए
फिर दूसरों के हिस्से की स्वतंत्रता
अनंत है अतिक्रमण के विचार की परिधि
इसीलिए फिर दूसरों के हिस्से का जीवन भी चाहिए
वासनाएं नए क्षेत्रों में करती है घुसपैठ
सिध्दांत और सुभाषित बदलने लगते हैं हथियारों में।"10

साम्राज्यवाद मनुष्य की सामाजिक चेतना समाप्त करने के लिए निरंतर षड्यंत्ररत हैं ।भूमंडलीकरण मनुष्य की सार्वभौमिक एकता स्थापित करते नहीं बल्कि उसे उपभोगवादी पशु में परिवर्तित करके व्यक्तिवादिता को प्रोत्साहित कर रहा है। बाजारों की झुंड संस्कृति इसका उदाहरण है ।मनुष्य को अकेला कर दिया जा रहे हैं जिससे विरोधी आवासों को आसानी से खामोश कर दिया जा सकता है। इस सच्चाई को कुंवर नारायण ' इन दिनों ' शीर्षक कविता में प्रस्तुत करते हैं -

" वैसे सच तो यह है कि मेरे लिए
बाजार एक ऐसी जगह है
जहां मैंने का हमेशा पाया है
एक ऐसा अकेलापन जैसे मुझे
बड़े-बड़े जंगलों में भी नहीं मिला । "11

निरंतर बढ़ती हत्याओं बलात्कारों और युद्धों का इस साम्राज्यवादी समय से गुपचुप संबंध है। विपक्ष की विश्वसनीय आवाज गुम होती जा रही है ।मानवीय भविष्य के तमाम संकट को साम्राज्यवादी समय के परिप्रेक्ष्य में ' इक्कीसवीं सदी' शीर्षक कविता में विष्णु नागर प्रस्तुत कर रहे हैं -

" अब पता चला कि इक्कीसवीं सदी में तो
फिर से युद्ध हुए, हत्याकांड हुए
हिरोशिमा से बड़े हिरोशिमा हुए
चेर्नोबिल से बड़े चेर्नोबिल हुए
फिर से बलात्कार हुए
फिर से चीख की तरह किसी से ध्यान नहीं दिया
फिर से गरीबी ,फिर से बेकारी
फिर से समृद्धि के तांडव हुए
फिर से भगवान, फिर से हरा
फिर से गुलामियों के पैरोकार हुए।"12

बाजार का उपयोग साम्राज्यवाद इस प्रकार उपनिवेश के अनुकूल माहौल मुहैया करने के लिए करता है। इसका असर आज के सामाजिक जीवन में दिखाई दे रहा है। लीलाधर जगूड़ी की ' अंतर्राष्ट्रीय बाजार' शीर्षक कविता इस संदर्भ में उल्लेखनीय है -

" जहां दिन और रात बराबर हो जाते हैं
वहां एक पड़ोसी ने मुझे हाईजैकर कहकर
.....गाली दी
पेशाब के समुद्र पार सर्बब से निकलकर
मेरा एक और पड़ोसी
देखता है अफ्रीका की काली पूंजी यार्कशेयर में
गोरी हो गई है
वह अपने पड़ोसन से झगड़ पड़ता है
वह उसे कहती है हाईजैकर, आतंकवादी
और आखिर में उल्लू का पट्ठा ।"13

साम्राज्यवादी समय में मनुष्य की सामाजिकता नष्ट हो रही है । उनके सारे सामाजिक संबंध खतरे में है क्योंकि बाजार समय में संबंधों का

आधार ही मुनाफा है ।इस गंभीर संकट को वीरेन डंगवाल ' दुष्चक्र में सृष्टा ' में प्रस्तुत करते है -

" पर हमने यह कैसा समाज रच डाला है
इसमें जो दमक रहा शर्तिया काला है
आटे की थैली काली है
हर सांस विषैली निकाली है।"14

साम्राज्यवादियों के अश्वमेध इस उत्तर आधुनिक युग दो तीन अपवादों को छोड़ दें तो पूरी दुनिया को अपने पैरों तले रौंद कर दौड़ रही है। इतिहास साक्षी है कि जनतांत्रिक राष्ट्रों में प्रायः उसको सादर आमंत्रित करके पूरे तामझाम के साथ स्वागत करते हैं ।लेकिन कहीं ना कहीं विपक्ष की आवाज अब भी बुलंद है ।उसे चुप कराने के लिए या तो साम्राज्यवाद सीधे आक्रमण करते हैं या देशज सत्ताकेंद्रों के सहारे चुप कराई जाती है ।नव वामपंथी कविता साम्राज्यवाद की इस रणनीति का भी परिचय देती है । इराक पर साम्राज्यवादियों के आक्रमण का ऐसा एक भयानक चित्र केदारनाथ सिंह अपनी ' इराक युद्ध में घायल बच्चों को टीवी पर देखकर ' शीर्षक कविता में प्रस्तुत करते हैं -

" अस्पताल की ओर भागते
एक बदहवास बाप की खून से लदापदा लंबी बाहों में
एक शिशु की बेदम रुलाई
जो इतनी थी बेदम कि नहीं सकती थी
चीत्कार!
बंद कर दो टीवी
अगर जला ना सको उसे
इनकार करता हूं कि मैं कवि हूं
और देख रहा हूं इन्हीं आंखों से
एक शिशु आंख हवा में झूलती हुई.....
नहीं मुझे सोने नहीं देगी
वह शिशु आंख कई रातों तक
रोने नहीं देगी मेरी अपनी ही आंख
जो खो चुकी है फूट कर रोने की क्षमता।"15

साम्राज्यवाद से उपजे इस गहन मानवीय संकट को समग्रता में प्रस्तुत करने के साथ ही साथ नव वामपंथी कविता उससे उबारने के उपायों का अन्वेषण भी करती है ।उल्लेखनीय है कि नव वामपंथी कवि प्रतिरोध के उपायों का अन्वेषण अपनी संस्कृति में करती है ।उदय प्रकाश की ' वर्षा राग' शीर्षक कविता इस संदर्भ में स्मरणीय है-

" यह कागज की नाव चली जाए अमेरिका
सिखला दे उनको पूरब का तौर तरीका
एटम बम से बिल्कुल ही धौरी बछिया नहीं डरती
न्यूटन से गांव मडर की मक्खी भी नहीं मरती
गुन्नू ने चोंगी सुलगा कर लट्ठ संभाला
आ जाए अब रीगन हो या बेगिन साला।"16

साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक सैनिक और वैचारिक आक्रमणों के प्रतिरोध में नव वामपंथी कविता विकल्प का अन्वेषण संस्कृति में करती है और प्रेम का विकल्प प्रस्तुत करती है ।क्योंकि कविता अंतत: सांस्कृतिक कर्म है और संस्कृति की आधारशिला प्रेम है ।इसलिए यह अकारण नहीं है कि मध्यकाल में भी सत्ता केंद्रों की प्रभेद की रणनीति के प्रत्युत्तर में संत कवियों ने प्रेम का विकल्प ही प्रस्तुत किया था। हमें याद रखना चाहिए कि जहां प्रेम गुम हो जाता है ,वहां प्रभेद प्रारंभ होता है जिससे मनुष्य विरोधी सत्ता केंद्रों को जड़े जमाने का स्पेस मिलता है ।इसलिए साम्राज्यवाद के विरुद्ध के तमाम प्रतिरोध इस स्पेस को समाप्त करने से ही संभव है। केदारनाथ सिंह की ' घोषणा ' शीर्षक कविता में लिखते हैं -

"मैं घोषित करता हूं
कि इस अघोष युद्ध में
जहां बहुत कुछ नष्ट हो चुका है
वहां अब भी .....अब भी
प्यार है ।"17

संक्षेप में कहें तो नव वामपंथी कविता प्रेम पर केंद्रित या प्रेम के महत्व को बार-बार रेखांकित करने वाली कविता है। कहना होगा कि यह मानव भविष्य के प्रति उसकी पक्षधरता का सबल सबूत है।

सन्दर्भ सूची

1. लेनिन – संकलित रचनाएं – पृ.411
2. वहीं -पृ.696
3. धूमिल – मोचिराम – पृ. 22
4. नागार्जुन – 1981 – पृ .33
5. उदय प्रकाश – बहेलिए – पृ.35
6. वहीं – पृ-36
7. राजेश जोशी – नेपथ्य में हंसी – पृ. 39
8. कात्यायनी - हमारे समय में कुछ काव्य विस्मृत शब्द और क्रियाएं – पृ 45
9. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम – पृ. 26
10. कुमार अंबुज – अतिक्रमण – पृ.55
11. कुंवर नारायण - इन दिनों – पृ.37
12. विष्णु नागर – इक्कीसवीं सदी – पृ.21

13. लीलाधर जगूड़ी - अंतर्राष्ट्रीय बाजार – पृ 40
14. वीरेन डंगवाल - दुष्चक्र में सृष्टा – पृ .22
15. केदारनाथ सिंह - इराक युद्ध में घायल बच्चों को टीवी पर देख कर – पृ .19
16. उदय प्रकाश - वर्षा राग – पृ. 42
17. केदारनाथ सिंह – घोषणा – पृ .19